महिला आरक्षण बिल से महिलाओं में आया जोश

छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव, 14 मार्च। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद महिला आरक्षण बिल को लेकर भी स्थानीय महिलाओं में उत्साह का संचार हुआ। महिलाओं में जहां बिल के प्रति सकारात्मक सोच पैदा हुई वहीं पुरुषों के मध्य भी महिलाओ को समान दर्जा दिये जाने की भावना पैदा हुई है। महिलाओं के आगे आने को लेकर पुरूषो में ज्यादा मतभेद नहीं सुनाई दे रहा है।

दिग्विजय महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या कु. हेमलता मोहबे ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि महिलाओं की स्थिति की समीक्षा करें तो इस वर्ग का वर्चस्व बढ़ा है। लेकिन अंदरूनी तरीके से जांच पड़ताल करें तो कामकाजी महिलाएं दोहरी मार झेल रही है।

पूर्व महापौर श्रीमती शोभा सोनी भी राज्य सभा में बिल पास होने को लेकर काफी उत्साहित हैं। उनका मानना है कि महिलाएं अब अपनी जिंदगी को जीभरकर जी सकेंगी। उनका कहना है कि हालही के वर्षों में देश में राष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष एवं विपक्ष की नेता के रूप में महिलाएं ही काम कर रही हैं। मयालको ग्रुप की सीईओ ममता किरण का कहना है कि महिलाओं ने जिस ताकत से अपना प्रदर्शन किया है उससे विश्व में महिलाओं के बीच जोश का संचार हुआ। उन्होंने महिला आरक्षण बिल का समर्थन करते कहा कि महिलाओं के लिये यह बिल मील का पत्थर साबित होगा। महिलाओं को सशक्त भूमिका में आने के लिये यह बिल काफी मददगार साबित होगा। उनका मत है कि महिलाएं आज सभी जगह बेहतर काम कर रही हैं। उनके संचालन व कार्य दक्षता के बूते कई कंपनियों को सफलताएं भी मिल रही है। पहले की अपेक्षा महिलाएं अपने कार्य में अधिक ताकत लगा सकेंगी। स्थानीय गौरी नगर वार्ड में आंगनबाड़ी बच्चों से जुड़ी सरिता उके महिलाओं के प्रति अब परिस्थितियां बदलने की बात कह रही हैं। उनका कहना है कि महिलाओं के लिये बिल पास होना एक अच्छी खबर है। कम से कम चारदीवारी में रहने वाली महिलाएं अब घरों से बाहर निकलकर अपने नेतृत्व की क्षमता को आसानी से परख सकेंगी। महिलाओं के बारे में लोगों की सकारात्मक सोच के प्रति उनका कहना है कि अभी भी काफी बदलाव की संभावना है। घरों में भी महिलाओं की स्थिति इस बिल के आने के बाद काफी बदलेगी। वहीं उन्होंने घर को सम्हालने के लिये भी महिलाओं को अन्य कार्य की अपेक्षा प्राथमिकता दिये जाने की बात कही।

महिला चिकित्सक डॉ. साजिदा आलम भी खुश हैं। उनका मानना है कि महिलाएं कभी भी आरक्षण की मोहताज नहीं रही हैं। यदि ऐसी बात रहती तो देश में सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी एवं अन्य महिला शख्सियत पैदा नहीं होतीं।

शहर की महिलाओं की प्रतिक्रियाएं

हेमलता मोहबे

शोभा सोनी

ममता किरण

सरिता उके

लोक की पुन:स्थापना करती मड़ई-09

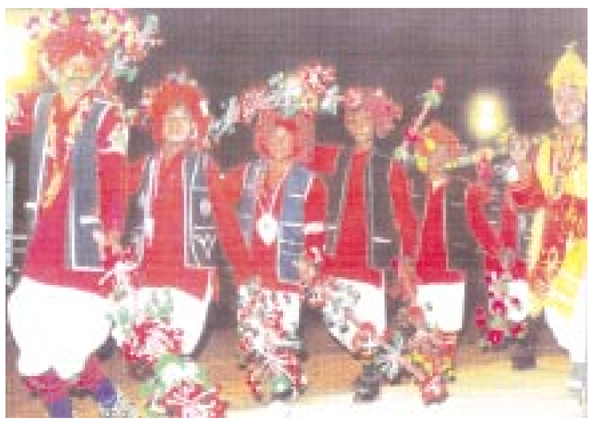

सलीम खां फरीद

बिलासपुर, 14 मार्च। पिछले 23 वर्षों से रावत नाच महोत्सव समिति बिलासपुर द्वारा लोक के रेखांकन के विनम्र प्रयास के तहत निरंतर प्रकाशित वार्षिक पत्रिका मड़ई-09, अपने सीमित साधनों के बाद भी आज देश-विदेश में लोकाधारित विविध कलाओं, गीतों, उपादानों उपक्रमों, कथाओं का पुन: आख्यान प्रस्तुत कर रही है। डा. कालीचरण यादव के संपादन-प्रकाशन में मड़ई का यह अंक भी शोध-परक सामग्री के कारण सदैव संग्रहणीय है। 38 लेखों में कुछ अतिशय विद्वतापूर्ण आलेखों को छोड़कर अन्य लेख बहुत ही सरस तथा लोक से नाक-भौं सिकोड़ने वालों की आंखें खोलने वाले हैं। अजातशत्रु का रिपोर्ताजनुमा संस्मरण 'गांव में नवदुर्गा' आंखे भिगो-भिगो जाता है तो छत्तीसगढ़ को विश्व में पहचान दिलाने वाले हबीब तनवीर को याद करते हुए राजेश गनोदवाले भी अपने रूदन से रोक नहीं पाए। श्रद्धांजलि स्वरूप ही 20 पन्ने हबीब तनवीर को समर्पित हैं, जिन्हें विजय वर्मा, अशोक बाजपेयी, आशीष त्रिपाठी, विनय उपाध्याय ने उनके दल सदस्यों के संग इमानदारी से सिरजा है।

स्वेदशी लोक संस्कृति तथा ग्लोबल कल्चर का स्पष्ट भेद प्रकट करता डा. प्रभा दीक्षित का लेख स्त्री-मुक्ति का जुलूस निकालती उन लंपटताओं की सच्चाई बयानी करता है जो मुक्ति के नाम पर 'लिव इन रिलेशनशिप' में विश्वास करती है। विभिन्न लोक संस्कृतियों पर अपनी आग्रहपूर्ण दृष्टि के संग बंधे लेखों में आंध्र की लोक नाट्य परंपरा, कुमाउंनी लोक साहित्य, भोजपुरी लोक गीतों का वैशिष्ट्य, मराठी लोकगीतों में राम-सीता, अवधी लोकगीत, नागा लोक संस्कृति, समकालीन मलयालम कविता, बज्जिका लोकगीत, उर्दू साहित्य में लोक संस्कृति, आदी संस्कृति विषयक लेख शोध पत्रों की सामग्री जैसे आभास देते हैं। पत्रांशों में डा. सुरेश पंडित ने सलाह दी है कि मड़ई का जो स्वरूप है वह बौद्धिक जनों को मानसिक संतुष्टि देता है। शेष लोगों के लिए इसकी कोई सार्थकता नहीं है। सामान्य पाठक भी इससे जुड़े इसमें कुछ रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री को भी स्थान मिले।

मगर श्री पंडित स्वयं अपने लेख में इस दुरूहता और कोरे पांडित्य से नहीं बच पाए हैं। इसी पंडाई के व्यामोह में मड़ई अपनी स्वयं की स्वतंत्र शैली विकसित नहीं कर पाई है। अगले प्रस्तावित विषय 'लोकनाट्य' पर संपादक के पास काफी संभावनाएं हैं, जहां वे प्राप्त आलेखों में मूल नाट्य-शब्दों को जस का तस रख कर लोक की आत्मा बचा सकते हैं। अधिकतर विभागाध्यक्ष इधर-उधर से उद्धृत सामग्री में अपनी जटिलतम मन:स्थिति को निष्प्राण भाषा में बांधकर मड़ई के हथियल अतिथि बनकर पाठक पर बोझ बन जाते हैं। इस बार ये बोझा उतार देंगे यादव जी।

अंक जाल - 1294

■	15	19	21	■	36	16	14	19	■
14		7		■		5		9	26
15	7		3	■	8		7		20
12		2		■		9		7	26
21	2		7		5	■	■	■	■
■	■	■	■	7		9		3	29
26	8		6		■		6		13
18		2		6	■	3		7	14
29	8		5		■		4		12
■	21	15	16	30	■	21	16	16	■

खाली जगहों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर बाएं से दाएं व ऊपर से नीचे जोड़ें, उत्तर मटमैले रंग में दिया गया है। चारों कोनों में दी गई संख्या की जोड़ दोनों ओर से एक समान होनी चाहिए।

हल करने का समय, शुरु........ खत्म........

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

सुडोकू - 1484 (Easy)

	6				5	4		
5	3				1		6	
8		9				5		
3			2	1		7	9	
9	7	1				6	2	3
	2	6			9			8
		5				9		7
	9		5				1	6
		3	7				8	

इस पहेली की खाली जगहों में एक से नौ के बीच के अंक भरे जाने हैं। किसी भी आड़ी या खड़ी पंक्ति में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है 3-3 के प्रत्येक ब्लाक दिए गए हैं। किसी ब्लाक में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है।

हल करने का समय, शुरु........... खत्म...........

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

मिनी सुडोकू - 355

	4				
5		6			
4				3	
	2				6
		4	1		5

इस पहेली की खाली जगहों में एक से 6 के बीच के अंक भरे जाने हैं। किसी भी आड़ी या खड़ी पंक्ति में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है किसी ब्लाक में किसी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है।

हल करने का समय, शुरु........... खत्म...........

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

खतरे में सुंदरवन : इंसान और भगवान सबके हमले

पहले पेज से आगे

पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के बीच तकरीकन 300 कि.मी. तक सैकड़ों छोटे बड़े द्वीप समूहों को समेटे, पसरा हुआ है सुंदरबन। सुंदरबन, जिसे हम सब विश्व के विशालतम-डेलटा या सघनतम वनों में से एक के तौर पर जानते हैं। ये तब बसा जब बंगाल की खाड़ी में मिलने से पहले गंगा, ब्राह्मपुत्र और मेघना नदियों ने अपना पलद्दर जमा किया। वैसे, अब भी यह क्षेत्र नदी के बहाव को झेलता है, नदी के चौड़े मुहाने देखता है नदियों अपना खारा पानी यहां तक लेकर आती है- तलद्दर अब भी जमा होता है, छोटे-छोटे द्वीप अब भी बन रहे हैं जिन्हें पानी की लहरों का करंट अक्सर जुदा कर जाता है।

सुंदरबन का वो भाग जो पश्चिम बंगाल में है, भारत का 60 प्रतिशत वन प्रदेश कहलाता है, जिसमें 102 द्वीप है, जिनमें से 54 में लोगों का वास भी है। इन 54 द्वीपों में ज्यादातर 1700 ई.पू. में अंग्रेजों द्वारा वन काटकर बसाए गए ताकि वहां से भी राजस्व वसूला जा सके। अब दो सौ साल से ज्यादा समय गुजर जाने के बाद जंगलों का नामोनिशान उन 54 द्वीपों से तकरीबन मिट चुका है। शिकार, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इन सबने मिलकर इस इलाके को तूफान और चक्रवात संवेदी बना डाला है।

हालांकि मानव सघनता वाले उन 54 द्वीपों पर अब जंगल नहीं, पर सुंदरबन के शेष 10,000 स्क्वेयर कि.मी. क्षेत्र (जिसमें से 40 प्रतिशत भारत का हिस्सा है) पर सघन वन और वन्यजीव अब भी पाए जाते है। ये वो इलाका है जो कई-कई दिनों तक पानी में डूबा रहता है। इन दुर्गम वनों में तकरीबन 100 जैव प्रजातियों का निवास है। इनमें रॉयल बंगाल टाइगर, जंगली मगरमच्छ, शार्क, स्पॉटेड डीयर, वाइल्ड वॉट और कई अन्य सांपों और पक्षियों की प्रजातियां शामिल है। इस इलाके के वन एक तरह से बंगाल के तटीय इलाकों के रक्षक हैं, जो मृदा को तो बांधते ही है, साथ ही विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से तटीय क्षेत्रों की रक्षा भी करते हैं।

वैसे तो सुंदरबन की पहचान वहां रह रहे रॉयल बंगाल टाइगर्स से है पर भारत के वन्य जीव संरक्षण विभाग का ध्यान पहली बार 1960 में इस तरफ तब गया जब यहां रह रही बड़ी बिल्लियों की संख्या में तेजी से गिरावट देखी गई। जब तक वन्य जीव संरक्षण आंदोलन ने गति पकड़ी तब तक वॉटरफेलो, गेंडों की प्रजातियां और कई पौधों की प्रजातियां लुप्त हो चुकी थी। 1973 में भारत सरकार ने 2,585 स्कवेयर किमी. के सुदंरबन क्षेत्र को प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत संक्षिप्त घोषित किया। 1985 में इस क्षेत्र को यूनेस्को के वर्ल्ड हैरीटेज के अंतर्गत शामिल किया गया और 1980 में तकरीबन 9,360 स्कवेयर किमी. क्षेत्र को वायोस्फीयर रिजर्व घोषित किया गया।

इन सभी प्रावधानों ने जहां एक और सुंदरबन के रक्षक और संरक्षण में मदद की, वहीं यह जनसामान्य के बीच एक रहस्यमयी जंगलों के रूप में स्थापित हुआ। ये सुंदरबन तकरीबन 3.9 मिलियन लोगों का घर है, जहां बाढ़ और चक्रवात संवेदी इलाकों में मछली पालन और कृषि के जरिए लोग अपनी गुजर-बसर कर रहे हैं। प्राकृतिक आपदाओं को ध्यान में रखते हुए लोग यहां बिखरे हुए नहीं बल्कि करीब-करीब साथ-साथ रह रहे हैं। तब ही यहां की आबादी 1200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है. करीब 45000 स्केवयर कि.मी. पर रह रहे ये लोग सिर्फ 280 कि.मी. की सड़कों और 42 स्कवेयर कि.मी. तक रेल से जुड़े हुए हैं। रिक्शा यहां आवाजाही का मुख्य साधन है। आधारभूत सुविधाओं और अधोसंरचना की कमी ने इसे देश के सबसे गरीब इलाकों में शामिल कर दिया है जहां कि प्रति व्यक्ति आय सालाना 10,000 रुपये या उससे भी कम है।

सुदंरबन के बारे में बात करते हुए जादवपुर यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ ईसियनों ग्राफी स्टडीज के निदेशक सुगाता हाजरा एक बेहद दिलचस्प बयान देते हैं- सुंदरबन अपनी तरह का वो विशिष्ट इलाका है जहां देश की सबसे ज्यादा सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर जनता, सबसे अधिक कमजोर और संवेदनशील जमीन पर रह रही है. पिछले 20 साल में समुंदर ने दो द्वीपों को अपने में जब्त कर लिया। लोहाछाड़ा और सुपारीभंगा इन दो द्वीपों के बाद अब वैज्ञानिकों की चेतावनी मानें तो अगला नंबर घोराभारा और सागर का है।

श्री हाजरा और उनकी टीम ने कई वर्षों तक इस क्षेत्र का अध्ययन करने के बाद अपनी विश्लेषण रिपोर्ट जारी की, जिसमें की गई टिप्पणियां और जिसमें दिए गए तथ्य चौंका देने वाले हैं। रिपोर्ट कहती है कि समुद्र स्तर में वार्षिक रूप से 3.3 मिली मीटर की वृध्दि है जिसपर दक्षिणी तटों पर बसे द्वीप समुद्र में समा रहे है. 3.3 मि.मी. की वृध्दि औसत 200 मि.मीटर से कही अधिक है, जिसका कारण तीव्र मृदा क्षरण को माना जा रहा है। इसके अलावा समुद्र जल स्तर के बढ़ने के कई अन्य कारण भी हैं।

श्री हाजरा के मुताबिक सबसे महत्वपूर्ण कारण तो वन्य क्षेत्र का कम होना है, जिसके कारण मिट्टी को बांधकर रख पाना मुश्किल हो रहा है। 1885 में सुंदरबन का वन क्षेत्र जहां 20 हजार स्केवेयर कि.मी. था वहीं अब ये तकरीबन 9,600 स्क्वेयर कि.मी. ही बचा है जिनमें से घने जंबल सिर्फ 4200 स्कवेयर कि.मी. में ही देखे जा सकते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण जनसंख्या वृद्धि है। आजादी के बाद से अब तक सुंदरबन ने 234 प्रतिशत की जनसंख्या वृद्धि देखी है। इस गति से बढ़ती जनसंख्या अगर सन 2020 तक 5 मिलियन का आंकड़ा पार कर ले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। मिट्टी, पत्थर, गाद जो पहले नदियां अपने पानी के साथ बहा कर ले आया करती थी, वो भी अब बांधों के आसपास ही रूक जाया करता है।

ये सभी कारण सुंदरवन को अतिसंवेदनशील बना देते हैं। 15 साल तक लगातार श्री हाजरा की टीम ने लहरों और उनकी स्वभाव को समझा और मापा। इस सबके बाद जो सामने आया वो बहुत खौफनाक था। सन 2050 तक सागर द्वीप के आसपास समुद्र जल स्तर तकरीबन 50 से मी की गति से बढ़ेगा साथ ही इस ही अनुपात में क्षरण भी बढ़ेगा। ऐसे में दक्षिण तटीय बाहर द्वीपों की पहचान कर ली गई है जिनके डूब जाने की संभावना है।

राज्य सिंचाई और वन विभाग के साथ-साथ स्थानीय प्रशासन द्वीप मुहैया कराए गए आंकड़े कहते है कि पिछले 20 सालों में करीब 485 जिंदगियों और 130.6 करोड़ की संपत्ति का नुकसान हो चुका है।

अगर श्री हाजरा की टीम द्वारा जताई गई संभावनाएं सत्य साबित हुई तो आनेवाले समय में ये नुकसान कई गुना बढ़ेगा। लगभग 500 रॉयल बंगाल टाइगर के लिए विख्यात बंगाल का सुंदरबन खतरे में हैं। **(बढ़ते तापमान और सुंदरबन को लेकर सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट के लिए किए जा रहे अध्ययन का एक अंश।)**

वर्ष का औसत तापमान (डिग्री सेंटीग्रेड में)

वर्ष	तापमान
1980-	31.4
1985-	31.6
1990-	31.5
1995-	31.8
2000-	32.0
2005-	32.2
2007-	32.5

बैकुंठधाम से अवैध कब्जे हटाने आयुक्त से मिले कांग्रेसी

भिलाई नगर, 14 मार्च। जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यकारिणी सदस्य समयलाल साहू ने निगम आयुक्त को ज्ञापन सौंपकर शारदा पारा आवासीय योजना के भूखण्डों पर कुछ लोगों द्वारा किये जा रहे निर्माण कार्य पर तत्काल रोक लगाने व उसे तत्काल हटाने की मांग की है। आयुक्त को सौंपे ज्ञापन में श्री साहू ने कहा कि बैकुण्ठधाम कैम्प-2 स्थित शारदा पारा आवासीय योजना का विवाद न्यायालय में लंबित है। न्यायालय द्वारा उक्त पूरी योजना के भूखण्ड पर स्थगन आदेश दिया गया है। निगम भिलाई को आदेशित किया गया है कि उक्त भूखण्ड को यथावत रखा जाए।

श्री साहू ने कहा कि इसके बावजूद कुछ लोग इस योजना के सेक्टर-3 ब्लाक-4 में 90 पाईल्स खोदकर कालम खड़े कर भवन निर्माण कार्य कराया जा रहा है। लगभग 10 हजार वर्गफीट पर अवैध कब्जे की नियत से इस निर्माण कार्य पर निगम ने 8 मार्च को कार्यवाही करते हुए 30 कालमों को तोड़ दिया गया था। शेष 60 कालम आज भी यथावत खड़े हैं।

Name, Fame and Game-1401

आज हम दे रहे हैं सुनील दत्त की फिल्मों के नाम जो अंग्रेजी अक्षरों की इस भीड़ में आपको ढूंढना है। नाम के हिज्जे अंग्रेजी में हैं और ये दाएं से बाएं, बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर या तिरछे- किसी भी दिशा में हो सकते हैं। उत्तर आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर। इन नामों की फेहरिस्त लंबा होने से हम इन्हें किस्तों में ले रहे हैं।

N (ऊपर), S (नीचे), W (बाएं), E (दाएं)

```
M E H E R B A A N R R D M S L U U I
A U S Q K N R B O H A A A T P R K N
D R J I Y E W C G R A D J Z J H A A
C A E H E U K B D N H W H L A Y N T
U W U H E Y R K A N K L C N A A A S
T Q A W S J A R A T B V D A S C L U
A I D N I R E H T O M A S O L S I D
X N P P I M U E S U A A D Z A F M N
G I B S A E Y A N N R A I M K S Z I
O H H T H A D P A E P A D S R K E H
X T E A O N P A M M D N R H U U J M
A E W Y T I M I A H H O I A A R A U
G Z I C N S L V G Y R S T A J B A H
P A B K F Z A K H M E E E N A A N Q
H A L S J H A A R M U G R R A A I B
O R R H D I M R R N A G I N A N D G
D M D A M H U Y A I B L E X X E U S
H A E T M U N N A B H A I M B B S A
U H R R Q P V N C F P K E R N W H I
W E I I Q X A I J L Y C E L T L M R
W T Z Y N Z P R A T A J U S S R A A
Q Q X A Q D G P A W M R O O S A N J
Q D X H M T A O X L X N I P L X A Y
M R O F T A L P Y A W L I A R I R F
```

AAJAURKAL	DARDKARISHTA	DARINDA
EKHIRAASTA	FAASLE	GEETAMERANAAM
GUMRAAH	HAMRAAZ	HEERA
HUMHINDUSTANI	JAANIDUSHMAN	KHANDAAN
KSHATRIYA	KURBAAN	MEHERBAAN
MERASAAYA	MILAN	MOTHERINDIA
MUJHEJEENEDO	MUNNABHAIMBBS	NAGIN
PAAPI	PADOSAN	PARAMPARA
RAILW AYPLATFORM	RESHMAAURSHERA	ROCKY
SADHNA	SHAAN	SUJATA
WAQT	YAADEIN	ZAKHMEE

गणित का चौराहा -1214

	-		×		-3
+	■	+	■	+	
	-		×		-51
+	■	×	■	+	
	×		+		18
12		25		15	

हल करने का समय, शुरु........ खत्म........

खाली जगहों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर समीकरण को पूरा करें। किसी भी अंक का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना है। प्रत्येक आड़ी या खड़ी पंक्ति एक गणित समीकरण है। याद रहे कि गुणा और भाग पहले करना है, जोड़ व घटाना बाद में।

इसका उत्तर ढूंढें आज ही के अंक में किसी पृष्ठ पर

छत्तीसगढ़ शब्द पहेली क्रमांक-1454

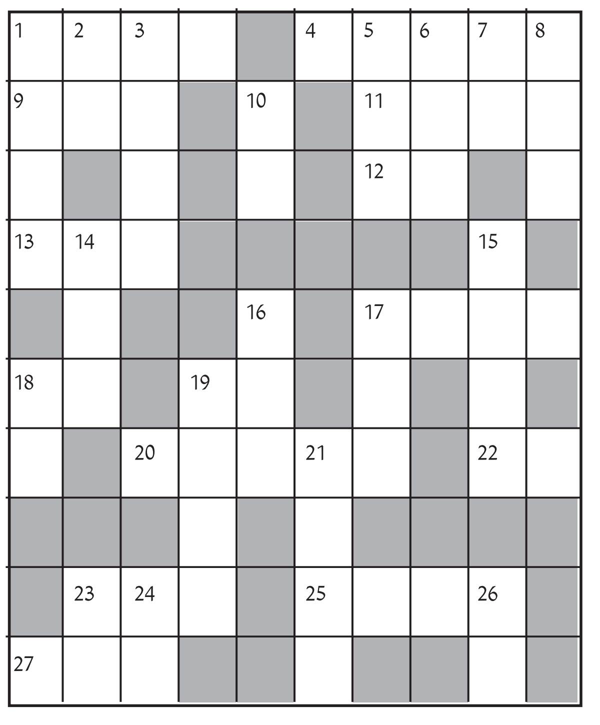

संकेत :-

बाएं से दाएं :-

1. असम की राजधानी
4. गुजरात की राजधानी
9. झूठा, मिथ्या बोलने वाला (छ.ग.)
11. कृपा, तरस, दया (उर्दू)
12. संपत्ति, धन-दौलत (उर्दू)
13. ताश के पत्तों की संख्या
17. पश्चिम बंगाल की राजधानी
18. लड़की, कन्या (छ.ग.)
19. दास, सेवक (उर्दू)
20. त्रिपुरा की राजधानी
22. विध्वंस, बरबादी
23. रूप, भिन्नता
25. काम धंधे से लगा हुआ
27. गोवा की राजधानी

ऊपर से नीचे :-

1. महबूबा, प्रेयसी
2. समग्र, सारा
3. प्राचीन, पुराना
5. धैर्य, सब्र
6. सिंचाई का कृत्रिम साधन
7. दुख, क्लेश (उर्दू)
8. बहुमूल्य पत्थर
10. झारखंड की राजधानी
14. भारी, वजनदार
15. दूर भगाना, खदेड़ना
16. नींद से उठने की अवस्था (उर्दू)
17. ईंधन का एक रूप
18. चाकू-छूरी का अग्र भाग
19. कर्नाटक की राजधानी
21. साग, सब्जी
23. प्रतिज्ञा, सौगंध
24. मुसलमानों में निकाह पढ़ाने वाला
26. बड़ी बहन, दादी

◆ सईद खान लवी

(उत्तर आज के ही अंक में किसी पृष्ठ पर)